देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

9 772395 711007

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
दिसबर 2024
Vol.-20, Issue-6(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, साहित्य, शिक्षा, तकनीकी एवं अभियांत्रिकी में समकालीन वैश्विक रूझान और परिवर्तन विशेषांक

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. सुलक्षणा अहलावत,
डॉ. विकास शर्मा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 20 ISSUE-6(1) (दिसम्बर 2024) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. सुलक्षणा अहलावत

प्रवक्ता अंग्रेजी, शिक्षा विभाग, हरियाणा सरकार

डॉ. विकास शर्मा

निदेशक, गुरु विद्यापीठ, रोहतक

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

अनुक्रमाणिका – दिसम्बर 2024

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. सुलक्षणा अहलावत, डॉ. विकास शर्मा	90-9
2.	**Perennial Migration in Bihar and its Consequences**	**Dr. Akhilesh Kumar**	**10-15**
3.	महाकवी लोकशाहीर वामनदादा कर्डकजी के काव्य में व्याप्त 'राष्ट्रप्रेम की भावना'	दिक्षा ज्ञानेश्वर तिगोटे	16-19
4.	बिहार की हिन्दी साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' (द्वैमासिक) : एक परिचय	अनिमेष कुमार	20-24
5.	लोक साहित्य और पर्यावरण	अविनाश कुमार	25-29
6.	डिजिटल क्रांति और ऑनलाइन शिक्षा : वैश्विक रुझान और भारत का योगदान	डॉ. बबीता बाथम	30-33
7.	वैश्वीकरण के चक्र में विविध संस्कृतियों का विलय और सांस्कृतिक पहचान का पुनर्भाषीकरण	प्रो. बेला मेहता	34-36
8.	कोविड-19 का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	बिन्दु सेजवाल, डॉ. आशीष पाण्डेय	37-41
9.	कुंभीपाक उपन्यास में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम	बॉबी कुमार	42-45
10.	सक्रिय राजनीति से दूर होते युवा	दीपिका शुक्ला	46-50
11.	महाकवि लोकशाहीर वामनदादा कर्डकजी के काव्य में व्याप्त 'राष्ट्रप्रेम की भावना'	दिक्षा ज्ञानेश्वर तिगोटे	51-54
12.	वैश्वीकरण और दलित साहित्य : समीक्षात्मक अध्ययन	गजानंद रैगर	55-59
13.	हिंदी साहित्य में महिलाओं का योगदान	डा. इंदिरा वी.	60-63
14.	**CONTRIBUTION TO THE KNOWLEDGE OF DESMIDS OF DEHRADUN, UTTARAKHAND STATE, INDIA**	**Prof. Iqbal Habib**	**64-70**
15.	**Research Paper on Artificial Intelligence and its Process**	**Dr. Jagdeep Dubey**	**71-80**
16.	वर्तमान परिपेक्ष्य में उपनिषदों पर डिजिटल युग का बढ़ता प्रभाव : एक अध्ययन	जूली सोनी	81-84

17.	सुषम बेदी के उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा	85-88
18.	प्रवासी साहित्य : एक नई चेतना	डॉ. कविता गजराना	89-91
19.	हिन्दी साहित्य में मूल्य चिंतन	खुशबू खोईवाल	92-95
20.	भाषांतर आणि अनुवाद	प्रा.डॉ. किरण नामदेव पिंगळे	96-100
21.	पं० लखमीचंद और पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में सामाजिक चेतना	नविता, डॉ. शर्मिला	101-105
22.	मानवाधिकार तथा संविधान	नविता सिंह, डॉ. शालिनी सिंह	106-111
23.	इन्टरनेट का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव : एक अध्ययन	पूनम कुमारी	112-116
24.	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों का मूल्यांकन	प्रिती भिमराव राऊत	117-120
25.	समकालीन हिन्दी साहित्य में जीवन मूल्यों का स्थान	डॉ. राजकुमार सेन	121-127
26.	भारतीय ज्ञान परम्परा में गणितशास्त्र की विरासत Heritage of Mathematics in Indian Knowledge System	सागर सिंह सिरोला	128-133
27.	दलित आत्मकथाओं में संदर्भित दलितों की आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक स्थिति	संगीता देवी	134-138
28.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रवासी साहित्य का प्रभाव	श्रीमती सविता अधाना	139-141
29.	वैश्विक युग में स्त्री की आर्थिक आजादी : भारतीय संदर्भ	डॉ. सिन्धु सुमन	142-146
30.	वैश्वीकरण की दौर में धर्म का परिवर्तन और उसका समाज पर प्रभाव	श्रीमती सुनंदा कश्यप	147-151
31.	सुशीला टाकभौरे के कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन	उमादेवी आर	152-156
32.	सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कहानियों में स्त्री जीवन	डॉ. वंदना मिश्रा	157-160
33.	भारतीय परिधान-हमारी आन बान शान	डॉ. विनोद कुमार परिहार	161-164
34.	समकालीन राजस्थानी चित्रकला से लोक तत्वों का सम्बन्ध	विशाल जाँगिड़	165-166
35.	समकालीन चीन और भारत में लू शुन एवं प्रेमचंद की सामाजिक प्रासंगिकता का संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन	शिओंग छन श्यू	167-171
36.	મહિલા સશક્તિકરણ : પ્રાચીન થી અર્વાચીન	Dr. Arjunsinh Mahenrasinh Chauhan	172-178
37.	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का स्वरूप - मॉरिशस के संदर्भ में	वि. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	179-182

38. साहित्य और शिक्षा में समकालीन वैश्विक व रुझान परिवर्तन डॉ. अनिता स्वामी 183-186

39. **Empowering Indian Rural Education through Portable LMS : Need, Challenges, Implementation** **Arun R. Dhang, Dr. Pradhnya M.Wankhade** **187-192**

40. बी. एड. स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन डॉ. बबीता 193-199

41. शिक्षा के समकालीन परिवर्तनों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में योगदान डॉ. हेमलता जैन, बाला पानेरी 200-205

42- **The Role of Physical Activity in Mitigating the Impact of COVID-19 on Physical and Mental Health** **Tanu Manglani** **206-212**

43. भारत के विश्वगुरू निर्माण की ओर सशक्त महिलाओं के अद्भुत प्रयास और चुनौतियों का अध्ययन ललिता सैनी 213-218

44. श्रीमद्भगवद्गीतानुसारी जीवनयोगः व्यक्तित्वनिर्माणञ्च विद्वान् मञ्जेशः एम् 219-226

45. मीडिया के बदलते आयाम और वैश्वीकरण मोहित कुमार शर्मा, ज्योत्सना भट्ट 233-237

46. हिन्दी सिनेमा का समाज पर बढ़ता प्रभाव डॉ. नीरज कुमार सिन्हा 238-241

47. बिलाड़ा का प्रारंभिक इतिहास (17वीं सदी तक) डॉ. विनीता श्रीमाली, पिस्ता विश्नोई 242-247

48. हिंदी भाषा का उद्भव एवं विकास राहुल रमण 248-249

49. **TOURISM AS A PARADIPLOMATIC TOOL : RAJASTHAN'S GLOBAL CAMPAIGNS AND ECONOMIC IMPACT** **Shahzeen Shoaib Afsar** **250-256**

50. धार जिले से पलायन के कारण और राजनीतिक प्रभाव शिवराम देवके 257-261

51. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी जीवन डॉ. अनुराधा शुक्ला 262-277

52. नागार्जुन के काव्य में सांस्कृतिक जीवन मूल्य डॉ. अमित कुमार सिंह 278-282

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Dec. 2024 Page No. : 179-182

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का स्वरूप – मॉरिशस के संदर्भ में

वि. अमुधा, शोधार्थी,
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, सहायक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशिका
हिन्दी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस,
टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीस (विस्टास) पल्लावरम, चेन्नई 600 117

सार :–

हिंदी भाषा का प्राचीन नाम है 'आर्यभाषा' यानि 'श्रेष्ठों का श्रेष्ठ'। हिंदी का प्रचार–प्रसार सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है। भारत के बाहर विदेशों में भी हिंदी भाषा को अपनाया गया है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर या लिखकर अपने भाव विचारों को दूसरों को प्रकट करता है। भाषा में साहित्य की परंपरा होती है। उसकी अपनी लिपि होती है। भाषा समाज का प्रमुख अंग है, इसलिए भाषा का सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द :– वैश्वीकरण, साहित्य, प्रचार–प्रसार, प्रवासी, संस्कृति।

प्रस्तावना :–

वैश्वीकरण के इस आधुनिक युग में संसार एक बाजार के समान है जिसमें भारत एक विशाल बाजार के रूप में दुनिया के सामने उभरी है। इस आधुनिक युग में हिंदी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। 'हिंदी भाषा ही संस्कारित करने का माध्यम है जो संसार को एकता के सूत्र में बाँधकर जीवन मूल्यों को उन्नयन का प्रेरणा देती है।'[1] पूरे विश्व में हिंदी का अध्ययन एवं अध्यापन छह सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हो रहा है, जिन्मे प्रमुख हैं – लंदन, जर्मनी, इटली, फीजी, अमेरिका, मॉरिशस, सिंगापुर, सूरीनाम, चीन, स्वीडन, सऊदी अरब आदि।

प्रस्तुत प्रपत्र में मैं वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का स्वरूप :–

मॉरिशस के सन्दर्भ में विषय पर संक्षिप्त लेख प्रस्तुत करना चाहती हूँ। 'हिंदी का प्रचार–प्रसार जो विश्व में हुआ इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हिंदी उपनिवेशवादी, साम्राज्यवादी ताकत के रूप में जोर–जबरदस्ती से किसी भी देश में प्रचारित–प्रसारित नहीं की गई, मदद, सहायता, सहिष्णुता और भाईचारे के बल पर विश्व के देशों में फैली है। हिंदी भारतीय संस्कृति, सामाजिक एकता, वैदिक धर्म की संवाहिका के रूप में विश्व में फैली है।'[2]

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी :–

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य को गहराई से देखें तो प्रवासी भारतीयों ने स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात भी हिंदी भाषा का विस्तार करने लगे। भारत के बाहर विदेशी देशों में हिंदी की पहुँच बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ही हो गई। विदेशों से आकर भारत पर आक्रमण करने वाले राजाओं जैसे सिकंदर, महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, तैमूर लंग, नादिर शाह, आदि ने भारतपर विजय हासिल की और उन्हें यहाँ की भाषा को सीखना–जानना अनिवार्य हो गया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने यहाँ के लोगों को राजनीतिक–प्रशासनिक कार्य संपन्न करने के लिए 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना की। फ्रेडरिक पिंकार (1836 से 1896 तक) इंग्लैंड में रहकर हिंदी की सेवा करने वालों में अग्रणी नाम है। इन्हीं के प्रयासों से भारत आने वाला प्रत्येक अंग्रेज हिंदी अनिवार्य रूप से सीखने लगा था।

विदेशों में प्रवासी भारतीयों का गमन :–

भारत से लोग विदेशों में व्यापार के उद्देश्य से अथवा खनिज सम्पदा की तलाश में गए और जल तथा थल दोनों मार्ग से गए। 'इन देशों की कला और संस्कृति, भाषा और साहित्य, शिल्प तथा स्थापत्य तथा धर्म और दर्शन आदि सभी क्षेत्रों में भारत का गहरा प्रभाव आज भी हमें मुग्ध करता है। इंडोनेशिया, बर्मा (म्यांमार), थाईलैंड, मलेशिया, कम्बोडिया, लाओस आदि देशों में अनेक हिन्दू मंदिर विख्यात है।'[3] गिरमिटया मजदूरों ने विदेशों में मजदूर के रूप में जाकर भारतीय संस्कृति को बचाए रखने का प्रयास हिंदी के माध्यम से किया। त्रिनिदाद, टोबेगो, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम, फीजी आदि देशों में ये मजदूर बस गए। 1834 से 1917 के मध्य तक ये मजदूर अंग्रेज उपनिवेशों के अंदर काम करने गए। आज उनकी पीढ़ियों ने अपने–अपने देशों में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक मामलों में उनका मजबूत पकड़ है। इस प्रकार अनेक देशों में हिंदी अपना जड़ जमा रही है। मॉरिशस में हिंदी जीवन का अहम हिस्सा बन गई है। 1834 में पहली बार प्रवासी लोग भारत से मॉरिशस में लाए गए। 1959 में ये मजदूर ब्रिटिश दासता से मुक्त हो गए। विभिन्न प्रकार के अत्याचारों को सहने के बाद इन मजदूरों ने अपने आपको अत्यंत शक्तिशाली बना लिए है। 'अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा में वे आज भी पूरी तरह से तत्पर हैं, बोलचाल में भोजपुरी का प्रयोग करते हैं। अब भोजपुरी का स्थान खड़ी बोली लेती जा रही है। इसलिए यहाँ की हिंदी का अधिकांश साहित्य खड़ी बोली में है। यहाँ के प्रवासी लेखकों ने अपने रचनओं में साहित्य, इतिहास, संस्कृति और धर्म को विषय वस्तु बनाया है।'[4]

भाषा और प्रवासी साहित्य :–

भाषा के विकास में यदि साहित्य की भूमिका है तो निश्चित रूप से साहित्य के विकास में भी भाषा की अहम् भूमिका रहती है। जैसे–जैसे समय और समाज बदलते रहते हैं, वैसे–वैसे उसका साहित्य और उसकी भाषा भी नित नए रूपों को अपनाती चलती है। 'भाषा के विकास में कथा साहित्य के योगदान पर विचार करते समय यह देखना होगा कि कथा साहित्य का वर्तमान वृत्त केवल भारत तक ही सीमित नहीं, वरन आज पूरी दुनिया के कोने–कोने में यह साहित्य रचा जा रहा है जिसे वैश्विक अथवा हिंदी का प्रवासी साहित्य कहा जा सकता है। मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम आदि देशों में यदि दूसरी–तीसरी पीढ़ी के रचनाकार साहित्य सृजन कर रहे हैं तो वहीं इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा आदि देशों में बेस प्रवासी प्रथम पीढ़ी के हैं, जो भारत से अपनी भाषा एवं संस्कृति साथ लेकर गए, लेकिन वहाँ की संस्कृति एवं परिवेश ने भी उनकी सृजनात्मकता पर पर्याप्त प्रभाव

डाला।'[5]

मॉरिशस में हिंदी का स्वरूप :–

मॉरिशस में हिंदी बोलने और समझने वाले लोग हैं, वहाँ भारतीय संस्कृति की स्पष्ट छाप परिलिक्षित होती है। 'मॉरिशस विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जहाँ संसद द्वारा हिंदी के वैश्विक प्रचार के लिए संयुक्त राष्ट्र संग की अधिकृत भाषा के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई। मॉरिशस जिसे 'हिन्द महासागर की पुत्री' कहा जाता है, अलेक्सांद्र ने अपनी औपन्यासिक कृति जॉर्ज में इसे 'भारतभूमि की पुत्री' कहा है।'[6] मॉरिशस को इस स्थिति तक लाने में हिंदी आप्रवासियों का बहुत बड़ा हाथ है। मॉरिशस में महिलाओं की उपस्थिति में भोजपुरी गीत, लोकगीत, संस्कार गीत आदि गूंजने लगे थे। भारत से मॉरिशस आए अधिकतर श्रमक हिंदी भाषी क्षेत्रों से गए थे, इसलिए वे परस्पर अपने कार्य व्यवहार के लिए हिंदी का ही प्रयोग करते थे। 'मॉरिशस में हिंदी के लोकप्रिय होने का मुख्य कारण है कि इनके पूर्वज अपने साथ अपनी संस्कृति और भाषा भी लेकर गए थे। वे अपने साथ रामचरितमानस और हनुमान चालीसा भी लेकर गए थे।'[7] 1901 में जब महात्मा गाँधी मॉरिशस आए उन्होंने प्रवासी भारतीयों की परेशानियों को समझा और उन्हें कानूनी सहायता करने के उद्देश्य से बैरिस्टर मगनलाल को मॉरिशस भेजा। बैरिस्टर ने मॉरिशस आकर हिंदी का विकास किया और उन्हें मॉरिशस का प्रथम विद्वान माना जाता है।

मॉरिशस का प्रवासी हिंदी साहित्य :–

भारत के बाद मॉरिशस ही वह देश है, जहाँ सबसे अधिक हिंदी रचनाएँ रची गई हैं। यहाँ कविता, उपन्यास, कहानी, लघु कथा, निबंध, आलोचना आदि हर विधा में लेखन कार्य चल रहा है। 'मॉरिशस के मूर्धन्य साहित्यकारों ने ही हिंदी को स्थानीय तथा अंतर्राष्ट्रीय फलक पर मान दिलाया है। युवा रचनाकारों को भी साहित्यिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा साहित्य सृजन के अवसर दिए जा रहे हैं।'[8] अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, वेणी माधव, दीपचंद बिहारी, वीरसेन जामा सिंह, प्रह्लाद राम आदि वरिष्ठ साहित्यकारों से प्रेरणा होकर मॉरिशस के युवा पीढ़ी हिंदी साहित्य सृजन से जुड़ रही हैं। मॉरिशस में हिंदी अपनी चुनौतियों को पार करती हुई निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर है। इसका भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है।

निष्कर्ष :–

मॉरिशस के पिछले डेढ़ सौ वर्षों के इतिहास में जिस तारा हिंदी भाषा ने प्रगति की है कि ऐसा लगता है भविष्य में भी इसका प्रचार–प्रसार होता रहेगा। जब तक हम हिंदी भाषा को अपने बौद्धिक जीवन का हिस्सा नहीं बनाते, जब तक हिंदी हमारे सोच–विचार का प्रमुख माध्यम नहीं बनती, तब तक वह बोलचाल की भाषा बनकर लड़खड़ाती ही रहेगी। निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि विदेश में रहने वाले हिंदी भाषी भारतीयों में हिंदी के उत्थान को जीवन का ध्येय कर लिया है। 'इससे उनको भारत के लिए कुछ कर डालने का सुख तो मिलता ही है, अपने दूसरे आप्रवासियों से सामाजिक और भावात्मक रूप से जुड़ने का एक जरिया भी।'[9] मूल बात में यही है कि अपने घर में निरादृत होकर हिंदी विश्व में कोई सम्मानीय स्थान नहीं पा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ. सं. 281
2. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, 2018, पृ. सं. 88

3. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा और विकास, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ. सं. 281
4. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा और विकास, विद्या प्रकाशन अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, 2018, पृ. सं. 89
5. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन विद्या प्रकाशन, 2018, पृ. 245
6. हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण, सुषम बेदी, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, पृ. 81
7. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा और चिंतन, विद्या प्रकाशन, 2018, पृ. 90
8. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा और चिंतन, विद्या प्रकाशन, 2018, पृ. 90
9. हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण, सुषम बेदी, सामायिक बुक्स, नई दिल्ली, 2018, पृ. 158

ईमेल : amudhav197910@gmail.com
संपर्क : 9840824531